सुमतिधाम प्रश्नोत्तरी

आधार ग्रंथ – छहढाला

प्रथम वर्ष
2025-26

कुल 151 पुरस्कार

कुल 5 लाख रूपये के पुरस्कार

तीन वर्ग में पुरस्कार
बालवर्ग, युवा वर्ग
प्रौढ़वर्ग

प्रथम 09 पुरस्कार
द्वितीय 21 पुरस्कार
तृतीय 33 पुरस्कार
चतुर्थ 72 पुरस्कार
विशेष 10 पुरस्कार

आयोजक : देवाधिदेव श्री सुमतिनाथ जिनालय, गोधा स्टेट, इन्दौर

www.sumatidham.com @Sumatidham

मंगल आशीर्वाद

पूज्य गणाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज

मार्गदर्शन
सपना जी मनीष जी गोधा

निर्देशन
पं. विकास जी छावड़ा

प्रमुख संचालक एवं संकलक
पं. संजय सिद्धार्थी
विदुषी प्रिया सिद्धार्थी
इंदौर

पुरस्कार

कुल
151 पुरस्कार

प्रत्येक वर्ग में 45 पुरस्कार

कुल तीन वर्ग में पुरस्कार
बालवर्ग, युवा वर्ग, प्रौढ़वर्ग

कुल
5 लाख रू.
के पुरस्कार

आयु सीमा – 10 वर्ष से अधिक के लिए

3 X 3 = 9 प्रथम (रत्नत्रय पुरस्कार) प्रत्येक को 11 हजार रूपये
7 X 3 = 21 द्वितीय (सात तत्व पुरस्कार) प्रत्येक को 5100 रूपये
11 X 3 = 33 तृतीय (ग्यारह प्रतिमा पुरस्कार) प्रत्येक को 3100 रूपये
24 X 3 = 72 सांतवना (तीर्थंकर पुरस्कार) प्रत्येक को 1100 रूपये।
05 प्रभावना पुरस्कार एवं 05 श्रेष्ठ पुरस्कार (दशधर्म पुरस्कार)
05 छहढाला कंठस्थीकरण पुरस्कार

उत्तर पुस्तिका भेजने का पता

श्रीमती सपना गोधा
देवाधिदेव श्री सुमतिनाथ दिगम्बर जिनालय,
एच पी पेट्रोल पम्प के पास, गोधा एस्टेट,
गांधी नगर, इंदौर 453112

पं. संजय सिद्धार्थी
103-सी, सोमानी नगर, ग्यारह दुकान के ऊपर
एयरपोर्ट रोड, इंदौर (म.प्र.) 452005
मो. 7509824330

।।श्री वीतरागाय नमः।।

तीन भुवन में सार, वीतराग - विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहूँ त्रियोग सम्हारि कैं।।

ऊर्ध्व, मध्य एवं अधो इन तीनों लोकों में अष्टादश दोषों से रहित भगवान का केवलज्ञान उत्तम है, आनंन्द स्वरूप है तथा मोक्ष सुख को देने वाला है, अतः हम अपने मन, वचन एवं काया तीनों योगों को एकाग्र कर वीतराग विज्ञान को नमस्कार करते हैं।

सुमतिधाम प्रश्नोत्तरी

आधार ग्रंथ – छहढाला

(ग्रंथ लेखन के 191 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में)

प्रथम वर्ष
2025-26

आयोजक : देवाधिदेव श्री सुमतिनाथ जिनालय, गोधा स्टेट, इन्दौर

नियमावली

1. प्रतियोगिता में प्रथम,द्वितीय,तृतीय एवं सांत्वना एवं अन्य पुरस्कार मिलाकर कुल 151 पुरस्कार दिए जायेंगे।
2. प्रतियोगिता जमा करने की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2025 है। जिसे आप सुमतिधाम के पते पर सीधे, डाक या कोरियर द्वारा भिजवा सकते हैं। वाट्सअप पर या पी.डी.एफ व फोटोकॉपी मान्य नहीं होगी।
3. परिणाम और विजेताओं की घोषणा 2026 में सुमतिधाम के वार्षिक उत्सव के अवसर पर सुमतिधाम इंदौर में की जायेगी। जिसकी सूचना आपको कार्यक्रम के पूर्व भेज दी जायेगी।
4. सभी प्रतियोगियों से विशेष अनुरोध यह है कि प्रतियोगिता में मांगी गई समस्त जानकारी आवश्यक रूप से एवं स्पष्ट अक्षरों में हिंदी या अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में ही लिखें। जिससे प्रतियोगिता/पुरस्कार/समापन/आगामी प्रतियोगिता की जानकारी आप तक भेजी जा सके।
5. उच्चतम एवं समान अंक होने पर पुरस्कारों का निर्णय ड्रा द्वारा ही निकाला जाएगा। समापन समारोह में आपकी उपस्थिति अनिवार्य रहेगी। या आपके परिचित द्वारा आपका आधार कार्ड दिखाना अनिवार्य रहेगा। जिसे हम आपके रजिस्ट्रेशन नंबर से चैक करके दे सकेंगे।
6. डाक विभाग/कोरियर विभाग के द्वारा यदि आपकी उत्तर पुस्तिका गुम हो जाती है तो आयोजक की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। अत: आप अपने पास उत्तर पत्रक की एक फोटो कॉपी अवश्य रख लें।
7. उत्तर पुस्तिका/उत्तर खण्ड प्रतियोगिता के अंत में दिया गया है। आपको सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर उत्तर पुस्तिका/उत्तर खण्ड में ही लिखना है न कि मूल प्रश्नों के आगे-पीछे, प्रश्नों के आगे-पीछे केवल आप अपने लिए उत्तरों का प्रयोग कर सकते हैं। हमारे पास जमा आपको मात्र उत्तर पुस्तिका/उत्तर खण्ड ही करना है।
8. उत्तर खण्ड में सुन्दरता का ध्यान रखें। भले ही आपका लेखन कैसा ही हो।
9. एक प्रश्न के दो या अस्पष्ट, कटे-छटे उत्तर मान्य नहीं होंगे।
10. प्रतियोगिता के खण्डों में जो संकेत या नोट दिए गए हैं उन्हें ध्यान में रखते हुए हल करें।
11. एक प्रतियोगी का एक ही प्रतियोगिता में नंबर लगाया जाएगा।
12. प्रतियोगी की आयु कम से कम 10 वर्ष होना अनिवार्य है।
13. प्रतियोगिता का निर्णय तीन वर्गों में किया जाएगा अत: उत्तर खंड में अपना वर्ग और आयु का चयन अवश्य करें।

    बालवर्ग- 10 से 16 वर्ष
    युवावर्ग- 17 से 25 वर्ष
    प्रोढवर्ग- 26 से ऊपर

    प्रतियोगिता संबंधी सभी प्रकार की जानकारी एवं सूचनाओं के लिए इस क्यू.आर. कोड के माध्यम से हमारे वाट्सअप ग्रुप से अवश्य जुड़ें।
14. उक्त सभी वर्गों से प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार दिया जाएगा।
15. प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चों को (बालवर्ग) को पुरस्कार दिये जायेंगे।
16. निम्न जानकारी के अभाव में प्रतियोगिता स्वत: निरस्त समझी जायेगी - नाम, रजिस्ट्रेशन नंबर (उत्तर पुस्तिका में दिया गया 04 अंकों का), आयु, वर्ग, मोबाइल नंबर, स्थान। अत: उक्त जानकारी भरने का अवश्य ध्यान रखें।
17. निर्णायक मण्डल का निर्णय ही अंतिम एवं सर्वमान्य माना जाएगा।
18. प्रतियोगिता संबंधी किसी भी जानकारी के लिए आप संजय सिद्धार्थी इंदौर के नंबर पर 7509824330 पर किसी भी समय कॉल या व्हाट्सएप्प पर संपर्क कर सकते हैं।
19. किसी भी तरह से प्रतियोगिता में त्रुटि पाए जाने पर या छपाई में असावधानी पाए जाने पर भी संजय सिद्धार्थी इंदौर के नंबर पर 7509824330 पर सूचित करें।
20. प्रश्नपत्र की राशि 100 रुपए रखी गई है जिसे आप 7509824330 इस नंबर पर फोन पे, गूगल पे, या UPI द्वारा संजय जैन सिद्धार्थी के पास जमा कर सकते हैं एवं उसी नंबर पर पैमेंट का डिटेल्स अवश्य भेजें।

पहली ढाल धाम (01)

नोट:- इसके सभी प्रश्नों के उत्तर पहली ढाल से हैं अतः पहली ढाल का स्वाध्याय कर प्रश्नों के उत्तर दें ।

1. छः माह पूर्व मणियों की कांति कम होने से मरण के विलाप संबंधी दुःख किस गति का है ?
2. नरक में बहने वाली नदी कौन-सी है ?
3. मनुष्य जीवन की कितनी अवस्थाएं होती हैं ?
4. मंदकषाय रूप भावों एवं परिणामों से कौन-सी गति प्राप्त होती है ?
5. श्रीगुरु अर्थात् दिगंबर जैनाचार्य किस प्रकार की शिक्षा देते हैं ?
6. जीव कब से मोहरूपी मदिरा का पान कर रहा है ?
7. दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के समस्त जीव क्या कहलाते हैं ?
8. जो स्व-पर को भुला दे उसे क्या कहते हैं ?
9. तीन लोक में सारभूत वस्तु क्या है ?
10. छहढाला के अनुसार तिर्यंच के बाद किस गति का वर्णन है ?
11. यह जीव पंचेन्द्रिय पर्याय में मन के बिना कैसा हुआ ?
12. नरकगति के लिए प्रयुक्त शब्द क्या है ?
13. नरक में पाया जाने वाला वृक्ष कौन-सा है ?
14. संसार में कौन-सा रत्न कठिनता से प्राप्त होता है ?
15. मन, वचन, काय क्या हैं ?
16. करुणा करके कौन उपदेश देते हैं ?
17. छहढाला के अनुसार दुर्लभ क्या है ?
18. नरकगति के दुखों को जीव कब-तक भोगता है ?
19. निगोद में एक श्वांस में अठारह बार होने वाला दुःख क्या है ?
20. नरकगति में कौन-से देवों द्वारा दुःख दिया जाता है ?

दूसरी ढाल धाम (02)

नोट:- इसके सभी प्रश्न छहढाला की दूसरी ढाल से सम्बंधित हैं अत: दूसरी ढाल का अध्ययन कर उत्तर दें -

1. कुगुरु, कुदेव और कुधर्म की सेवा करना कौन-सा मिथ्यात्व है ?
2. झाड़ू लगाना आदि घर के कार्यो को करते हुए जो हिंसा होती है, वह कौन-सी हिंसा है ?
3. 'मैं इसको मारूं' इस प्रकार विचार पूर्वक मारना कौन-सी हिंसा है ?
4. ख्याति, लाभ आदि की चाह से मानादि पुष्टकर आडंबर से युक्त आचरण करना क्या है ?
5. एक वस्तु के एक धर्म को मुख्य करके उसी धर्म को कहना, अन्य धर्मों का निषेध करना क्या है ?
6. जड़कर्म का आत्मा से दूध और पानी की तरह एकमेक होना क्या है ?
7. 'मूर्तिक' किस द्रव्य का स्वरूप है ?
8. जिसमें स्पर्श,रस,गंध,वर्ण न पाया जाये वह कैसा द्रव्य है ?
9. उपयोग स्वरूप कौन है ?
10. द्वितीय ढाल में कुल कितने छंद हैं ?
11. जीवादि तत्त्व कैसे हैं ?
12. प्रत्यक्ष रूप से दु:ख देने वाले कौन हैं ?
13. जीवादि तत्त्वों का अश्रद्धान है ?
14. ज्ञान दर्शन का व्यापार है ?
15. रागादि से युक्त भाव हिंसा के साथ होने वाली क्रियाएं क्या कहलाती हैं ?
16. हमें किसके कहे तत्त्व का अभ्यास करना चाहिए ?
17. जो मिथ्यात्व किसी के उपदेश से ग्रहण किया जाये, वह कौन-सा मिथ्यात्व है ?
18. 'शरीरादि भिन्न पदार्थो में आत्मा की कल्पना करना' यह किस तत्त्व की भूल है ?
19. व्यापार आदि में होने वाली हिंसा कौन-सी हिंसा है ?
20. राग-द्वेष आदि अठारह दोषों से सहित कौन होते हैं ?

तीसरी ढाल धाम (03)

नोट:- इसके सभी प्रश्न छहढाला की तीसरी ढाल से सम्बंधित है अत: तीसरी ढाल का अध्ययन कर उत्तर दें -

1. सम्यग्दर्शन कितने दोषों से रहित होना चाहिए?
2. मोक्ष में क्या नहीं है?
3. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग- ये किसके भेद हैं?
4. उपगूहन अंग का दूसरा नाम बतायें?
5. किनका सामान्य और विशेष रूप से श्रवण कर अटल श्रद्धान करना है?
6. चेतनता से रहित कौन-सा तत्त्व है?
7. शंका आदि आठ किसके दोष हैं?
8. सब धर्मों का मूल क्या है?
9. 'शब्द' किस द्रव्य की पर्याय है?
10. हमें क्या होकर परमात्मा बनना चाहिए?
11. किसमें रूचि सम्यग्दर्शन है?
12. सम्यग्दृष्टी के अप्रत्याख्यानावरण चारित्रमोह कर्म के उदय से क्या नहीं होता?
13. संख्या अपेक्षा कौन-सा है द्रव्य संख्या में असंख्यात है?
14. क्रियावती शक्ति के धारक कितने द्रव्य नहीं हैं?
15. जीव और पुद्गल को चलने में सहायक द्रव्य कौन-सा है?
16. जो पुद्गल भी नहीं है, अजीव भी नहीं है वह कौन-सा द्रव्य है?
17. जो अन्य द्रव्यों के पलटने में कुम्हार की कील के समान सहायक होता है वह कौन-सा द्रव्य है?
18. आस्रव किनके आने का द्वार है?
19. निकल परमात्मा का शरीर किससे निर्मित है?
20. आकाश के जितने भाग को एक पुद्गल-परमाणु घेरता है, वह क्या कहलाता है?

चौथी ढाल धाम (04)

नोट:- इसके सभी प्रश्न छहढाला की चौथी ढाल से सम्बंधित हैं अत: चौथी ढाल का अध्ययन कर उत्तर दें -

1. वह क्या है जिसके बिना ज्ञान सम्यग्ज्ञान नाम नहीं पाता ?
2. वह कौन-सा ज्ञान है जो इन्द्रियों आदि की सहायता के बिना होता है ?
3. मन:पर्यय ज्ञान कौन-सा प्रत्यक्ष है ?
4. गुणों के परिणमन को क्या कहते हैं ?
5. गुण, द्रव्य के कितने भागो में पाया जाता है ?
6. अणुव्रतों की रक्षा करने वाले व्रत क्या कहलाते हैं ?
7. पापों का सम्पूर्ण त्याग क्या कहलाता है ?
8. स्व और पर अर्थ को प्रकाशित करने वाली वस्तु क्या है ?
9. कौन-सा ज्ञान सकल प्रत्यक्ष है ?
10. कुधर्म के लिए छहढाला में कौन-सा शब्द आया है ?
11. किस बल से ज्ञानी जीवों के क्षणमात्र में बहुत कर्मों की निर्जरा हो जाती है ?
12. चौथी ढाल में कुल कितने छंदों/पद्यों का प्रयोग किया गया है ?
13. जो पदार्थ एक बार भोग करके पुन: नहीं भोगा जा सकता है, उसे क्या कहते हैं ?
14. वह कौन सा ज्ञान है जो इन्द्रिय और मन की सहायता से अस्पष्ट जानता है ?
15. एकदेश प्रत्यक्षज्ञान के कितने भेद हैं ?
16. सम्यग्ज्ञान प्राप्ति के लिए किनका अभ्यास करना चाहिए ?
17. अष्टमी और चतुर्दशी को कषाय एवं व्यापार आदि आरम्भ के कार्यों को छोड़कर प्रोषध सहित उपवास कौन-सा व्रत है ?
18. चोरी की वस्तु खरीदना- किस व्रत का अतिचार है ?
19. मुनिधर्म पालन की शिक्षा देने वाले व्रत कौन-से हैं ?
20. मौखर्य कौन-से व्रत का अतिचार है ?

पाँचवी ढाल धाम (05)

नोट:- इसके सभी प्रश्न छहढाला की पांचवी ढाल से सम्बंधित हैं अत: पाँचवी ढाल का अध्ययन कर उत्तर दें-

1. किसको प्रबल करने के लिए 12 भावनाओं का चिंतन करना चाहिए?
2. संसार में किंचित् भी क्या नहीं है?
3. हमें बारह भावनायें किसमें प्रवृत्त कराती हैं?
4. दु:खकारी कौन-से भाव हैं?
5. अनित्य वस्तु से अपना उपयोग हटाकर नित्य वस्तु में लगाना क्या है?
6. तप के माध्यम से कर्मों की कौन-सी निर्जरा होती है?
7. छः द्रव्यों के समूह का नाम कौन-सी भावना है?
8. मन-वचन-काय की चंचलता होने पर क्या होता है?
9. 'भावना' का पर्यायवाची नाम?
10. पाँच परावर्तनों में से चौथे परावर्तन का नाम बतायें?
11. 'मृत्यु के समय जीव को इंद्र और जिनेन्द्र भी बचाने में समर्थ नहीं हैं।' यह कौन-सी भावना है?
12. समय पाकर कर्मों का नष्ट होना क्या है?
13. संसरण अर्थात् भ्रमण करने का नाम क्या है?
14. 'आत्मा के चिंतन से आते हुए कर्मों का रुकना'- यह कौन-सी भावना है?
15. 'ये जवानी, मकान, गाडी, धन क्षणिक हैं।' यह कौन-सी भावना है?
16. संसार में सभी वस्तुएं अनित्य हैं, लेकिन 'मैं आत्मा' कैसी वस्तु हूँ?
17. महान पुरुषार्थी ज्ञानीजन, आस्रवभावों को दु:खरूप जानकर उनका क्या करते हैं?
18. सम्यक् ज्ञान को कौन-सी भावना कहा है?
19. सोलहवे स्वर्ग के ऊपर और अनुदिश विमानों से नीचे एक के ऊपर एक क्या हैं?
20. सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र किन भावों से रहित हैं?

छटवीं ढाल धाम (06)

नोट:- इसके सभी प्रश्न छहढाला की छठवी ढाल से सम्बंधित हैं अत: छठवी ढाल का अध्ययन कर उत्तर दें -

1. महाव्रतों से कौन सुखी हो जाते हैं ?
2. प्रमाद छोड़कर चार हाथ जमीन देखकर एकाग्रचित्त से जंतु रहित मार्ग पर चलना किसका मूलगुण है ?
3. छियालीस दोष टालकर आहार करना कौन-सी समिति है ?
4. पूर्वोपार्जित दोषों की आलोचना करना क्या है ?
5. हित-मित और ---------- वचन बोलना भाषा समिति कहलाती है।
6. स्थावर और त्रस जीव को एक नाम से क्या कहते हैं ?
7. साधु परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ?
8. शुद्धोपयोग को कौन-सा चारित्र कहा है ?
9. मुनिराज कितने परिषहों को जीतते हैं ?
10. यत्नाचार पूर्वक प्रवृत्ति का नाम क्या है ?
11. वस्तु के सर्वांशों को जानने वाले ज्ञान को क्या कहते हैं ?
12. वस्तु के एकदेश को जानने वाले ज्ञान को क्या कहते हैं ?
13. दिन और रात्रि के वे आवश्यक कार्य जो साधुओं को करने ही चाहिए, उन कार्यों को क्या कहते हैं ?
14. पं. दौलतराम जी ने किनकी छहढाला के आधार पर छहढाला की रचना की ?
15. छियालीस दोषों में उद्गम दोष कितने हैं ?
16. 'चउघाति विधि कानन दह्यो' पद से अरिहंत परमेष्ठी के वीतराग,सर्वज्ञ, हितोपदेशी में से किस गुण की महिमा बताई है ?
17. बाह्य पदार्थों का राग कौन-सा परिग्रह है ?
18. जानने योग्य पदार्थ क्या कहलाते हैं ?
19. सिद्ध भगवान के पूर्णरूप से शील के कितने भेदों का पालन पाया जाता है ?
20. जीव को प्रतिकूल समय आने से पूर्व ही शीघ्रता से क्या करने योग्य है ?

बताओ मैं कौन हूँ ? (07)

नोटः- सभी प्रश्नों के उत्तर एक या दो पदों में दें-

1. वैराग्यदायिनी -
2. मन सहित जीव -
3. मुनियों के शरीरादि मैले देखकर घृणा न करना -
4. बारह तपों में सर्वश्रेष्ठ तप -
5. आकुलता रहित मार्ग का नाम -
6. इच्छाओं को रोकने का नाम -
7. किसके जैसा जगत में कोई दूसरा पदार्थ सुख का कारण नहीं है -
8. अनंत धर्मात्मक वस्तु का सिद्धांत -
9. मोक्षमार्ग की प्रथम सीढ़ी -
10. 'सो धर्म मुनिन कर धरिए' इस पंक्ति के द्वारा बताइए कि कौन-सा धर्म मुनिराज को भावना के बाद आया है ?
11. अंतरंग और बहिरंग परिग्रह से सहित गुरु -
12. साधारण और प्रत्येक जिसके भेद हैं वह-
13. एक करवट में कुछ समय तक सोना क्या है ?
14. ध्यान-ध्याता-ध्येय का विकल्प किसमें नहीं होता -
15. राग को सुख का कारण मानना, यह किस तत्त्व की भूल है -
16. विपरीत एक कोटी के निश्चय करने वाला ज्ञान -
17. धर्म की साधना कर उसके बदले सांसारिक सुखों की इच्छा न करना ?
18. 'मैं सुखी, मैं दुःखी' ऐसी मिथ्या कल्पना करने वाला जीव -
19. प्रमाद से एकेंद्रिय जीवों का घात न करना
20. विमानवासी होने पर भी जीव वहाँ क्या नहीं होने से दुःखी है ?

सत्य-असत्य जोड़ी (08)

नोट- निम्न प्रश्नों में छहढाला में आये भेद-प्रभेदों में से 10 जोड़े सत्य एवं 10 जोड़े असत्य हैं । आप उत्तर पत्रक में सत्य एवं असत्य जोड़े के सामने संख्या लिखें - जैसे सत्य- 21,23 आदि।

1.	भावना	=	अनित्य	+	अशरण
2.	काल	=	निश्चय	+	व्यवहार
3.	अजीव	=	आकाश	+	चेतन
4.	मद	=	पूजा	+	ज्ञान
5.	मूढ़ता	=	देव	+	शास्त्र
6.	स्थावर	=	पृथ्वी	+	जल
7.	अंग	=	प्रभावना	+	परिग्रह
8.	बंध	=	शुभ	+	शुद्ध
9.	अज्ञान	=	संशय	+	विपर्यय
10.	परावर्तन	=	द्रव्य	+	काल
11.	निगोद	=	इतर	+	अनित्य
12.	लोक	=	ऊर्ध्व	+	पूर्व
13.	महाव्रत	=	ब्रह्मचर्य	+	अपरिग्रह
14.	समिति	=	प्रतिष्ठापन	+	भाषा
15.	द्रव्य	=	जीव	+	संवर
16.	तत्त्व	=	आस्रव	+	बंध
17.	आत्मा	=	बहिरात्मा	+	देहात्मा
18.	आस्रव	=	मिथ्यात्व	+	अनित्य
19.	परमात्मा	=	सकल	+	निकल
20.	अंतरात्मा	=	उत्तम	+	निकृष्ट

हाँ की ना और ना की हाँ (09)

नोट:- इस वर्ग में आपको हाँ या न में उत्तर देना है विशेष बात यह है कि आपको सभी प्रश्नों के उत्तर हाँ या न में नहीं देना है यहाँ कुल बीस प्रश्नों के उत्तर आपको देने हैं जिनमें प्रारंभ के दस प्रश्नों के उत्तर गलत देना है, अगले 10 प्रश्नों के उत्तर सही देना है -

जैसे - पाप पांच होते हैं। यह एक वाक्य है अब इसे हाँ या ना में उत्तर देते हैं तो यदि इसका क्रम 1 -10 तक है तो इसका उत्तर गलत देना है अत: इसका उत्तर होगा। नहीं

यदि यही प्रश्न 11-20 के मध्य होता तो इसका उत्तर होता हाँ क्योंकि 11 -20 तक के उत्तर सही देना है।

1. सम्पूर्ण ज्ञान के अभाव में प्रगट होने वाले केवलज्ञान को विज्ञानता कहते हैं।
2. जीव के भ्रमण करने की कथा बहुत लम्बी एवं विस्तृत है।
3. शरीर अपवित्र है। आत्मा भी अपवित्र है।
4. चौथे गुणस्थानवर्ती जीव ही जघन्य अंतरात्मा हैं।
5. कर्म के अच्छे फलों में रति करना बंध तत्त्व की सही श्रद्धा है।
6. आत्मा सदैव स्व रूप से है, पर-रूप से नहीं है, ऐसी दृष्टि अनेकान्त दृष्टि है।
7. पिपीलिका अर्थात् चींटी चार इन्द्रिय जीव है।
8. अरिहंत चार घाति कर्मों का नाश करके लोकालोक को जानते हैं।
9. जो मिथ्यागुरु, मिथ्यादेव और मिथ्याधर्म की सेवा करता है, वह अति अल्पकाल तक मिथ्यादर्शन ही पोषता है।
10. ज्ञान और अज्ञान दोनों ही आत्मा का हित करने वाले हैं।
11. मन-वचन और काय की हलन-चलन रूप क्रिया को योग कहते हैं।
12. रूप-रस-गंध-वर्ण सहित वस्तु अमूर्तिक है।
13. जो सदा जानने रूप परिणमित हो वह जीव है।
14. मिथ्यादृष्टि जीव पर-पदार्थों को अपना नहीं मानता है।
15. सिद्ध ही निकल परमात्मा नहीं हैं।
16. सेमल के वृक्षों के पत्ते तलवार की धार के समान तीक्ष्ण हैं।
17. कमण्डलु पानी संग्रहीत करने का उपकरण है।
18. नरकों के वृक्ष पृथ्वीकायिक होते हैं।
19. ऐरावत हाथी तिर्यंच गति का जीव है।
20. असुरदेव देवगति के असुर लोक में रहते हैं।

सही जोड़ी (10)

नोट : सही जोडी बनाकर उत्तर पुस्तिका में मात्र A. B. C. D..... लिखें।

1.	अव्याबाधत्व	A. कुदेव
2.	गतिहेतुत्व	B. आकाश
3.	केवलज्ञान	C. एक को मुख्य करना,अन्य का निषेध
4.	अमूर्तिक	D. नरक
5.	सम्यग्ज्ञान	E. बिना कालद्रव्य + अणु
6.	अनुभव	F. बुधजनजी
7.	संशय-भ्रमादि हरण	G. सुख उपजायक
8.	मिथ्या एकांत	H. जीव
9.	समता	I. तप में वृद्धि
10.	अधोलोक	J. देव
11.	अनायतन	K. स्वसंवेदन
12.	सम्यक् एकांत	L. चार घातिया कर्मों का अभाव
13.	चार इन्द्रिय	M. धर्मद्रव्य
14.	आहार ग्रहण	N. नौवे ग्रैवेयक तक
15.	भवनवासी	O. अनंत ज्ञान
16.	द्यानतरायजी	P. भौंरा
17.	सबसे कम प्रदेशी द्रव्य	Q. एक को मुख्य करके अन्य को गौण करना
18.	अवगाहन	R. दिगंबर मुनिराज के वचन
19.	स्वरूपाचरण चारित्र	S. आत्मा का
20.	वैराग्य भावना	T. छः आवश्यक

रिक्त स्थान (11)

1. दुःश्रुति त्याग ..... व्रत है।
2. ..... अवस्था अधमरी जैसी है।
3. मुनिराज ..... में प्रेम करते हैं।
4. दसधर्मों के पालनकर्ता ..... हैं।
5. अरिहंत परमेष्ठी ..... परमात्मा हैं।
6. मुनिराज की पिछी ..... का साधन है।
7. जुखाम ..... द्रव्य के गुण की पर्याय है।
8. सम्यग्दर्शन और ज्ञान में अंतर ..... से है।
9. काल द्रव्य सभी द्रव्यों के ..... में सहायक है।
10. हल्का-भारी,कड़ा-नरम, ठंडा, गरम.....।
11. ..... रूपी मदिरा हित और अहित भुला देती है।
12. पर द्रव्यों से भिन्न स्वयं की रूचि ..... सम्यक्त्व है।
13. तप की शक्ति से कर्मों का एकदेश खिर जाना ..... है।
14. जीव का सर्वाधिक समय ..... पर्याय में व्यतीत हुआ है।
15. देव-गुरु-धर्म को सम्यक् दर्शन का ..... जानना चाहिए।
16. बारह भावनाओं का चिंतवन परिवार में ..... के समान कहा है।
17. अनादि अनंत इस संसार में मनुष्य पर्याय का मिलना ..... है।
18. मुनिराज ..... प्रकार के जीवों की हिंसा एवं भावहिंसा नहीं करते।
19. मंद कषाय सहित दुखों / कर्म के फलों को भोगना ..... निर्जरा है।
20. जल और ..... के अलावा अन्य कोई वस्तु अणुव्रती श्रावक बिना दी हुई ग्रहण नहीं करते।

छंद पूर्ति संख्याओं से (12)

नोट:- आपको छंद दिए जा रहे हैं जिनमें आपको संख्याओं के आधार पर शब्दपूर्ति करके छंद पूरा करना है, ध्यान रखें संख्यायें अंकों में नहीं शब्दों में ही लिखना है- (जो शब्द छहढाला में आया है)

1. ..... घातिविधि-कानन दह्यो।
2. पायो ..... बिरियाँ पद।
3. मुनिव्रत धार ..... बार ग्रीवक उपजायो।
4. जे त्रिभुवन में जीव ..... ।
5. रहि हैं ..... काल यथा तथा शिव परिणये।
6. जघन कहे अविरति समदृष्टि ..... शिवमगचारी।
7. ..... व्रत के अतिचार पन-पन न लगावै।
8. ..... श्वास में अठदस बार।
9. ..... नरक बिन षड् भू ज्योतिष, वान भवन षंड नारी।
10. किनहूँ न करे न धरे को, ... द्रव्यमयी न हरे को।
11. ..... अभिन्न, अखिन्न शुध उपयोग की निश्छल दशा।
12. ज्ञानी के छिनमाहिं, ... गुप्ति तैं सहज टरै जे।
13. ..... बार दिन में लें आहार, खड़े अलप निज पान में।
14. अंतर ..... भेद बाहिर, संग दशधा तैं टलें।
15. ..... उपाय बनाय भव्य ताको उर आनो।
16. ..... लोक को नाज जु खाय।
17. सकल-निकल परमातम ..... विध।
18. मुख्योपचार ..... भेद यों बड़भागी रत्नत्रय धरैं ।
19. ..... देश अरु सकल देश, तसु भेद कहीजे।
20. लक्षण श्रद्धा जान, ... में भेद अबाधो।

चोर सिपाही का पता लगाओ (13)

नोट:- आपको जो वाक्य दिए जा रहे हैं उनमें चोर-सिपाही का पता लगाकर आपको उत्तर शीट में चोर के स्थान पर चोर का कथन या शब्द एवं सिपाही के स्थान पर सिपाही का कथन या शब्द लिखना है।
जैसे- सम्यग्दर्शन सुख का एवं मिथ्यादर्शन दु:ख का कारण है।
चोर- मिथ्यादर्शन सिपाही- सम्यग्दर्शन

1. पुण्य-पाप के फल में निराकुल सुख नहीं मिलता।
2. दुर्लभ मनुष्य पर्याय प्राप्त होने पर मोह नींद तोड़ने के लिए जिनवाणी सुनना चाहिए।
3. ज्ञान के समान अन्य कोई भी परद्रव्य सुख का कारण नहीं है।
4. दिशाओं में घूमते रहने की इच्छा, दिग्व्रत में श्रावक को दोष उत्पन्न कराती है।
5. सम्यकदृष्टि चारित्र मोह के उदयवश व्रत का पालन नहीं करता है।
6. संशय होना सम्यग्ज्ञान का दोष है।
7. जगत में धन दौलत आदि कुछ भी सुख के कारण नहीं हैं।
8. रागादि परिणामों को स्थिर करके एकांत स्थल में समताभाव पूर्वक सामायिक करना चाहिए।
9. मिथ्यात्व को त्याग करके आत्म कल्याण करने में अपना उपयोग लगाना चाहिए।
10. घातिया को घातने वाले अरिहंत हैं।
11. त्रस जीवों को संकल्पपूर्वक मारने के भावों को त्यागना अहिंसा अणुव्रत है।
12. जीव के चतुर्गति भ्रमण की सूचक संसार भावना है।
13. निंदा, स्तुति अथवा प्रशंसा में मुनिराज समता भाव पूर्वक रहते हैं।
14. सम्यग्दृष्टि के शंका-कांक्षा आदि दोष नहीं होते हैं।
15. शुध्दोपयोग में ध्यान-ध्याता का भेद नहीं रहता।
16. सम्यग्दृष्टि को लक्ष्मी का मद नहीं होता।
17. तिर्यंचगति में मूलत: मोह का ही दु:ख है। अत: आत्म कल्याण के मार्ग में लगें।
18. चारित्र गुण को अशुभोपयोग छलता है।
19. धन के संयोग से जीव को धन मद होता है।
20. पाप चिंतवन न करना ही मनोगुप्ति है।

सही क्रम (14)

नोट - वाक्यों के शब्दों को सही क्रम में लगाकर एक पूर्ण व सही वाक्य लिखें-

1	दु:ख को आत्मा देना है ही कषाय
2	मुनि आत्मध्यानी अंतरात्मा परिग्रह हैं शुद्ध उत्तम रहित दिगंबर उपयोगी
3	है लोकों तथा डरते तीनों जीव से है चाहते के दु:ख सुख
4	सुख में है संसार भी किंचित नहीं
5	अनंत दशा कर्मों मोक्ष से स्थिर है समस्त कहलाती सुखदायक रहित
6	जघन्य चौथे जीव ही हैं गुणस्थानवर्ती अंतरात्मा
7	आत्मा और ज्ञान करने वैराग्य वाले का हित है
8	तप इच्छाओं का ही है कारण और निर्जरा है रोकना को तप वह
9	पर निगोद जाता उसमें है नित्य से नहीं वापिस निकलता जीव तो
10	शोभा प्राप्त करने में सम्यग्दर्शन है ही जीव की
11	वस्त्र पर्यंत त्याग जीवन मुनिराज करते हैं
12	विरक्ति है भोगों संसार हैं कहते शरीर वैराग्य और को
13	कहते हैं साधर्मी रखने को नि:स्वार्थ के प्रति वात्सल्य प्रेम
14	जानना का लक्षण सम्यग्दर्शन और करना है सम्यग्ज्ञान श्रद्धान का लक्षण
15	अपना मिथ्या दृष्टि मानता पदार्थों जीव को पर
16	सहायता आदि है होता प्रत्यक्षज्ञान इन्द्रिय के बिना
17	जीव जी प्रभाव हैं,गए और थे के ज्ञान जायेंगे सम्यक् मोक्ष जाते से
18	गावों ही तक का नियम लिए पांच देशव्रत दिन जाने सात है के
19	परिणाम जीवों रक्षा का हेतु का पर निर्जरा की है
20	बिना क्रियाएं के समस्त सम्यक् दर्शन दु:खदायक हैं।

त्रुटी सुधार (15)

नोट:- जिस शब्द में त्रुटी (गलती) नजर आ रही है, उसे अलग करें व वहाँ आने वाला शुद्ध शब्द लिखें-
(ध्यान रखें आपको पूरा शब्द शुद्ध लिखना है मात्र मात्रा, अनुस्वार, अनुनासिक की शुद्धि नहीं सुधारना है)

क्र.	वाक्य
1.	धर उर ममता भाव सदा सामायिक करिये।
2.	एक देश अरु सकलदेश वसु भेद कहीजै।
3.	जिन पुण्य-पाप वहीं कीना।
4.	मुनि को भोजन देय बाद निज करै अहारै।
5.	सुतदारा होय न सीरी, सब धन-दौलत के हैं भीरी।
6.	संसार में कोई भी पदार्थ अशरणभूत नहीं है, केवल जीव ही शरणभूत है।
7.	तप के माध्यम से कर्मों का आर्जव होता है।
8.	पर्व चतुष्टय मांहि , पाप तज नैषध धरिये।
9.	जो भाव मोह तैं सारे, दृगज्ञान व्रतादिक न्यारे।
10.	निजकाल पाय विधि सरना, तासों निज काज न करना।
11.	असाता के उदय से शारीरिक निरोगता होती है।
12.	सभी द्रव्य अपने-अपने प्रदेशों में विश्वास करते हैं।
13.	सम्यक् कारण और ज्ञान कारज है सोई।
14.	जो भाव मोक्षतैं न्यारे, दृग ज्ञान व्रतादिक सारे।
15.	मतिश्रुत दोय परोक्ष,दक्ष मन ते उपजाहिं।
16.	सिंहादिक सैनी ह्वै क्रूर, निबल पशु मति खाये भूर।
17.	पुद्गल नभ धर्म सुधर्म काल, इनतें न्यारी है जीव चाल।
18.	जल मल ज्यों जिय तन मेला, पै भिन्न-भिन्न नहिं भेला।
19.	कोटि उपाय मिटाय भव्य, ताकौ उर आनौ।
20.	अंतर रागादिक धरें नेह, बाहिर धन अम्बरतैं सनेह।

भेद-चार्ट (16)

उदा. -	ग	→	न	ति	म	दे		
उत्तर -	गति -		नरक	तिर्यंच	मनुष्य	देव		
1.	अ	→	पु	ध	अ	आ	का	
2.	ज्ञा.दो.	→	सं	वि	अ			
3.	का	→	नि	व्य				
4.	रो	→	ज	ज	मृ			
5.	वि.	→	स्त्री	आ	रा	चो		
6.	कुधा	→	पी	ल	वी	म	च	मां	ह
7.	चा.	→	म	स	गु			
8.	नि.	→	ना	स्था	द्र	भा		
9.	र	→	ख	मी	क	च	क	
10.	का	→	उ	नि				
11.	त	→	जी	अ	आ	बं	सं	नि	मो
12.	यो	→	म	व	का			
13.	ए	→	पृ	ज	अ	वा	व	
14.	दे.	→	भ	व्यं	ज्यो	वै		
15.	र	→	स	स	स			
16.	आ	→	मि	अ	क	यो		
17.	मि	→	गृ	अ				
18.	रू	→	का	नी	पी	ला	स	
19.	प	→	द्र	क्षे	का	भ	भा	
20.	प्र	→	प्र	प				

पासवर्ड का नाम बताओ (17)

नोट - आपको नीचे के प्रश्नों में एक भेद- प्रभेदों का संख्यात्मक विवरण (छहढाला एवं बाहर से भी) दिया गया है आपको उन संख्याओं के नाम और मुख्य विषय उत्तर पत्रक में लिखना है।

जैसे - (1+4+9 = मिथ्यात्व + कषाय + नोकषाय = अन्तरंग परिग्रह)

क्र.	प्रश्न
1.	4+4+5+1+1
2.	8+5+2+5+7
3.	28+22+12+12+10+13+6+5
4.	5+12+25+15
5.	10+8+5+16
6.	10+12+5+6+3
7.	5+9+28+5+2+4+93+2
8.	40+32+24+1+1+1+1
9.	24+12+9+9+9
10.	5+5+5+6+7
11.	2+2+2+1+2
12.	16+16+10+4
13.	(3+3+2+5+4+2) + (3+3+3+5+4+2+16)
14.	46+8+36+25+28
15.	8+8+3+6
16.	5+3+4
17.	8+12+12+12+11+7+6+65+3+22+1
18.	1+4+9+10
19.	10+10+14+8+4
20.	52+9+1+1

पण्डित दौलतरामजी का जीवन परिचय

'छहढाला' जैसी अमर कृति के रचनाकार पण्डित दौलतरामजी का जन्म वि.सं. 1855-56 के मध्य सासनी, जिला-हाथरस में हुआ था।

उनके पिता का नाम टोडरमलजी था, जो गंगटीवाल गोत्रीय पल्लीवाल जाति के थे। आपने बजाजी का व्यवसाय चुना और अलीगढ़ बस गये।

आपका विवाह अलीगढ़ निवासी चिन्तामणि बजाज की सुपुत्री के साथ हुआ। आपके दो पुत्र हुए, जिनमें बड़े टीकारामजी थे।

दौलतरामजी की दो प्रमुख रचनाएँ हैं - एक तो 'छहढाला' और दूसरी 'दौलत-विलास'।

छहढाला ने तो आपको अमरत्व प्रदान किया ही; साथ ही आपने 150 के लगभग आध्यात्मिक पदों की रचना की, जो दौलत-विलास में संग्रहित हैं। सभी पद भावपूर्ण हैं और 'देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर' की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं।

'छहढाला' ग्रन्थ का निर्माण वि. सं. 1891 में हुआ। यह कृति अत्यन्त लोकप्रिय है तथा जन-जन के कंठ का हार बनी हुई है। इस ग्रन्थ में सम्पूर्ण जैनधर्म का मर्म छिपा हुआ है।

वि. सं. 1923 में मार्ग शीर्ष कृष्णा अमावस्या को पण्डित दौलतरामजी का देहली में स्वर्गवास हो गया।

अगला शब्द बताओ (18)

नोट:- आपको कुछ शब्द दिए जा रहे हैं उनके आगे का मात्र अगला एक शब्द लिखो-

1. मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान .....
2. ज्ञानोपयोग .....
3. स्पर्श-रस-गंध .....
4. कुगुरु-कुदेव .....
5. शुभ-बंध .....
6. द्रव्य-हिंसा .....
7. निश्चय .....
8. वैयावृत्य,स्वाध्याय, व्युत्सर्ग .....
9. शुभ-उपयोग, अशुभ-उपयोग .....
10. अन्यत्व, अशुचि .....
11. द्रव्य-क्षेत्र-काल .....
12. द्रव्य-योग .....
13. भूत, भविष्य .....
14. पूर्व, पश्चिम, उत्तर .....
15. अंतरंग .....
16. हलका, भारी, रूखा .....
17. पुद्गल, धर्म .....
18. ऊर्ध्व, मध्य .....
19. साधारण .....
20. कल्पोपपन्न .....

छहढाला की कतिपय प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं, जिनके कारण यह विशेष महत्त्वपूर्ण बनी है-

1 भाषा
2 गेयता
3 सरसता
4 सम्पूर्णता
5 गम्भीरता
6 संक्षिप्तता
7 नामकरण
8 क्रमबद्धता
9 मंगलाचरण
10 छन्दोयोजना
11 प्रामाणिकता
12 सारगर्भितता
13 गूढ़ तत्त्वज्ञान
14 काव्यात्मकता
15 प्रयोजनभूतता
16 आध्यात्मिकता
17 मनोवैज्ञानिकता
18 व्यापक दृष्टिकोण
19 सर्व विषयों की मैत्री
20 द्रव्य और भाव की मैत्री
21 ज्ञान और वैराग्य की मैत्री
22 विविध भाषाओं में अनुवाद
23 आगम और अध्यात्म की मैत्री
24 निश्चय और व्यवहार की मैत्री
25 द्रव्यानुयोग और चरणानुयोग की मैत्री
26 सम्यग्दर्शन -ज्ञान का महत्त्व-निरूपण

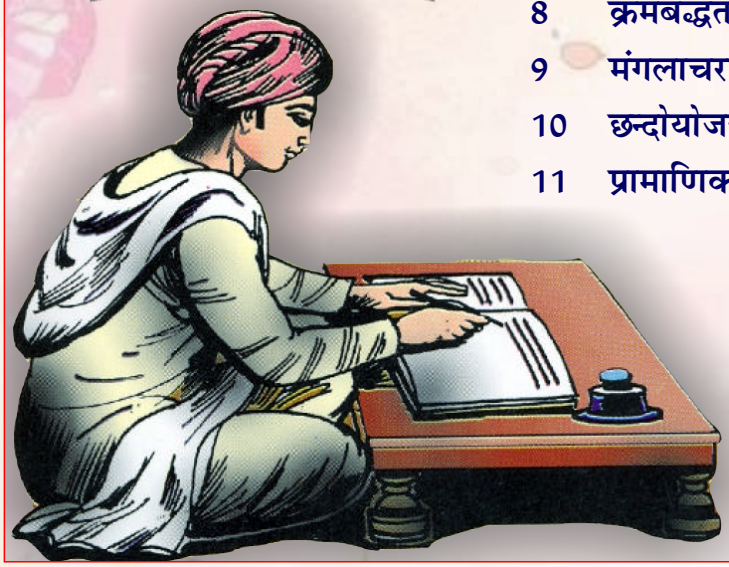

- डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

परिभाषा खंड (19)

नोट:- आपको कुछ शब्द दिए जा रहे हैं उनकी परिभाषा एक पंक्ति में दीजिये/ कम से कम शब्दों मे दीजिये। जिनमें अधिक से अधिक मात्र एक अल्प विराम (,) एवं एक पूर्णविराम चिन्ह (।) आना चाहिए । उसके नीचे आपको वह (उतनी) पंक्ति भी लिखना है जिस /जितनी पंक्ति में वह परिभाषा आई है।

1.	व्यवहार मोक्ष मार्ग	8.	आकाश द्रव्य	15.	परोक्ष ज्ञान
2.	निश्चय सम्यक् चारित्र	9.	गृहीत मिथ्या दर्शन	16.	कुदेव
3.	भाव अहिंसा	10.	जीव तत्त्व	17.	मिथ्याज्ञान
4.	सामायिक शिक्षा व्रत	11.	कुल मद	18.	अपध्यान अनर्थदण्ड व्रत
5.	सकल प्रत्यक्ष	12.	परिग्रह परिमाणाणुव्रत	19.	ईर्या समिति
6.	प्रभावना अंग	13.	दुःश्रुति अनर्थदण्ड व्रत	20.	ब्रह्मचर्य महाव्रत
7.	बंध तत्त्व	14.	देशव्रत		

शब्द से पंक्ति (20)

नोट:- इस वाटिका में आपको एक शब्द दिया जा रहा है वह शब्द छहढाला की किस पंक्ति में आया है आपको वह पंक्ति लिखनी है। ध्यान रहे हो सकता है वह शब्द दो या अधिक पंक्तियों में आया हो पर आपको मात्र एक पंक्ति ही लिखनी है और उस पंक्ति में पूछे गए शब्द को रेखांकित करना है।

1.	त्रिगुप्ति	5.	कीना	9.	समझ	13.	जेते	17.	भव्य
2.	भ्रमण	6.	भविलोक	10.	नियत	14.	फेर	18.	निर्जन्तु
3.	उपयोगी	7.	समकित	11.	दावानल	15.	टारी	19.	उद्योत
4.	दुःखकारी	8.	अक्ष	12.	पारावार	16.	निरंतर	20.	विशेषे

छहढाला में छिपा गूढ़ तत्त्वज्ञान -

1. जो विमानवासी हू थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुख पाय।
2. आतम अनात्म के ज्ञान हीन, जे जे करनी तन करन छीन।
3. परद्रव्यनितैं भिन्न आप में रुचि सम्यक्त्व भला है।
4. मोक्ष महल की परथम सीढ़ी या बिन ज्ञान चारित्रा।
5. पै निज आतमज्ञान बिना सुख लेश न पायो।
6. तास ज्ञान को कारन स्व पर विवेक बखानो, कोटि उपाय बनाय भव्य ताकौ उर आनो।
7. पुण्य पाप फल मांहि हरख बिलखो मत भाई।

चुनिए कोई एक – I (21)

नोट – आपको वैकल्पिक प्रश्न दिए जा रहे हैं जिनके उत्तर पहली ढाल से तीसरी ढाल तक आपको मिलेंगे आप उत्तर शीट में मात्र (अ, ब, स, द) ही लिखें –

1. असुरदेव कृत दु:ख–

अ. नरकगति ब. देवगति स. तिर्यंचगति द.मनुष्यगति

2. आत्मा का हित है–

अ. दुख में ब. राग में स. तप में द. सुख में

3. आत्मज्ञान में पुरुषार्थी न होना है–

अ. ज्ञान ब. अज्ञान स. प्रमाद द. राजकथा

4. जिनेन्द्र भगवान के वचनों पर शंका नहीं करना है–

अ. निकांक्षित ब. स्थितिकरण स. वात्सल्य द. कोई नहीं

5. पुद्गल का लक्षण नहीं है–

अ. मूर्तिक ब. चिन्मूरत स. गंध द. वर्ण

6. संसार परिभ्रमण का मूल कारण है–

अ.मिथ्यात्व ब.सम्यक्त्व स. शरीर द.संयोग

7. इस जीव का अनंत काल कहाँ बीता–

अ.निगोद में ब. नरक में स. तिर्यंच में द. देव में

8. 'मुनि तन मलिन न देख घिनावै' यह सम्यक्त्व का कौन–सा अंग है–

अ. नि:कांक्षित ब. निर्विचिकित्सा स. अमूढ़दृष्टि द. उपगूहन

9. 'रागादि प्रकट ये दु:ख देन' मात्र इन शब्दों में वर्णन है–

अ. संवर की भूल ब. आस्रव की भूल स. आस्रव का स्वरूप द. बंध का कारण

10. कुदेव किसे कहते हैं–

अ. अठारह दोषों से सहित ब. वस्त्राभूषण सहित स. शस्त्र सहित द. इन सभी सहित

11. छहढाला में मिथ्यात्व के कितने भेद बताये हैं -

अ. 2 ब. 1 स. 3 द. 4

12. खोटे शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करना है-

अ. गृहीत मिथ्यात्व ब. अगृहीत मिथ्यात्व स. गृहीत मिथ्याज्ञान द. अगृहीत मिथ्याज्ञान

13. वैराग्य है-

अ. संसार से विरक्ति ब. भोगों से विरक्ति स. शरीर से विरक्ति द. इन सभी से विरक्ति

14. शुभ-अशुभ फल मिलने पर राग-द्वेष बुद्धि होना किस तत्त्व संबंधी भूल है

अ. अजीव तत्त्व की ब. जीव तत्त्व की स. संवर तत्त्व की द. बंध तत्त्व की

15. संसार, जगत आदि नामों से जाना जाता है-

अ. ईश्वर ब. विश्व स. ब्रह्म द. महात्मा

16. राग मात्र को धर्म बताये वे सभी शास्त्र ..... हैं।

अ. सुशास्त्र ब. विशास्त्र स. कुशास्त्र द. सच्चे शास्त्र

17. पुद्गल द्रव्य का गुण नहीं है-

अ. चेतन ब. स्पर्श स. रस द. वर्ण

18. वैतरणी नदी है-

अ. मध्यप्रदेश में ब. उत्तरप्रदेश में स. महाराष्ट्र में द. इनमे से कोई नहीं

19. निश्चय से मोक्ष है-

अ. सिद्धशिला में ब. अरिहंत में स. लोकसभा में द. आत्मा में

20. काल द्रव्य सभी द्रव्यों के ..... में सहायक है-

अ. बैठने में ब. चलाने में स. परिणमन में द. ठहरने में

चुनिए कोई एक – ।। (22)

नोट – आपको वैकल्पिक प्रश्न दिए जा रहे हैं जिनके उत्तर चौथी ढाल से छठवीं ढाल तक आपको मिलेंगे आप उत्तर शीट में मात्र (अ, ब, स, द) ही लिखें –

1. बारह भावनाओं का करना चाहिए–

अ. ज्ञान ब. राग स. द्वेष द. चिंतवन

2. 'भ्रम रोग हर जिनके वचन,मुख चन्द्र तैं अमृत झरें' प्रस्तुत पंक्ति में कौन–सी समिति है–

अ. ईर्या ब. भाषा स. एषणा द. आदान–निक्षेपण

3. भव और भोगों से मुनिराज होते हैं –

अ. रागी ब. वीतरागी स. वैरागी द. अ,ब.,स. तीनों

4. कितने प्रकार के जीवों की हिंसा एवं भावहिंसा मुनिराज नहीं करते –

अ. पाँच ब. छह स. सात द. चार

5. आवश्यकों में नहीं है–

अ. स्तुति ब. प्रतिक्रमण स. वंदना द. ममता

6. 'मैं आज दक्षिण दिशा में आन्ध्र प्रदेश में नहीं जाऊंगा।' प्रस्तुत निर्णय में कौन–सा व्रत है–

अ. दिग्व्रत ब. देशव्रत स. अहिंसाव्रत द. अचौर्यव्रत

7. 'भाई! क्यों व्यर्थ में मिट्टी को उखाड़कर फेंक रहे हो।' प्रस्तुत पंक्ति में किस व्रत की प्रमुखता दिखाई गई है–

अ. दिग्व्रत ब. देशव्रत स. अनर्थदण्डव्रत द. सामायिक व्रत

8. सम्यग्दर्शन का लक्षण श्रद्धान करना है तो सम्यक् ज्ञान का लक्षण है–

अ. काम करना ब. पढ़ना स. जानना द. रमण करना

9. 'जल और मिट्टी के अलावा अन्य कोई वस्तु बिना दी हुई न लेना।' कौन–सा अणुव्रत है–

अ. अहिंसा ब. अचौर्य स. ब्रह्मचर्य द. सत्य

10. मुनिराज किसके पालनकर्ता नहीं हैं-

अ. बारह तपों के ब. दस धर्मों के स. संसार के द. रत्नत्रय के

11. निम्न में से संज्ञी और असंज्ञी दोनों भेदरूप कौन होते हैं -

अ. तिर्यंच ब. मनुष्य स. नारकी द. देव

12. श्रावकों और मुनिराजों में एक समान हैं -

अ. महाव्रत ब. गुणव्रत स. अभक्ष्य भक्षण द. आवश्यक

13. छहढाला ग्रंथ के रचयिता हैं -

अ. बुधजन जी ब. भूधरदास जी स. दौलतराम जी द. अ, स दोनों

14. जो कभी मोक्ष नहीं जायेंगे-

अ. भव्य ब. तीर्थंकर स. निकट भव्य द. दूरान्दूर भव्य

15. सम्यक्त्व का धारक जीव क्या बन सकता है-

अ. भवनवासी देव ब. स्त्री स. स्थावर द. प्रथम नरक का नारकी

16. निम्न में से आस्रव एवं बंध तत्त्व रूप क्या है-

अ. तप ब. ज्ञान स. पुण्य द. धर्म

17. निम्न में से शादी कौन नहीं कर सकता है -

अ. अणुव्रती ब. गुणव्रती स. शिक्षाव्रती द. महाव्रती

18. निम्न में से हेय है -

अ. बहिरातमता ब. बहिरात्मा स. जीव तत्त्व द. जीव द्रव्य

19. निम्न में से ज्ञेय है-

अ. गृहीत मिथ्यात्व ब. धन-समाज स. अविरति द. मोक्ष

20. निम्न में से उपादेय है

अ. पापी जीव ब. तप मद स. स्वरूपाचरण चारित्र द. विषय चाह

छहढाला वर्ग पहेली (23)

नोट:- नीचे दिए प्रश्नों के अनुसार छहढाला पर आधारित वर्ग पहेली को भरें -

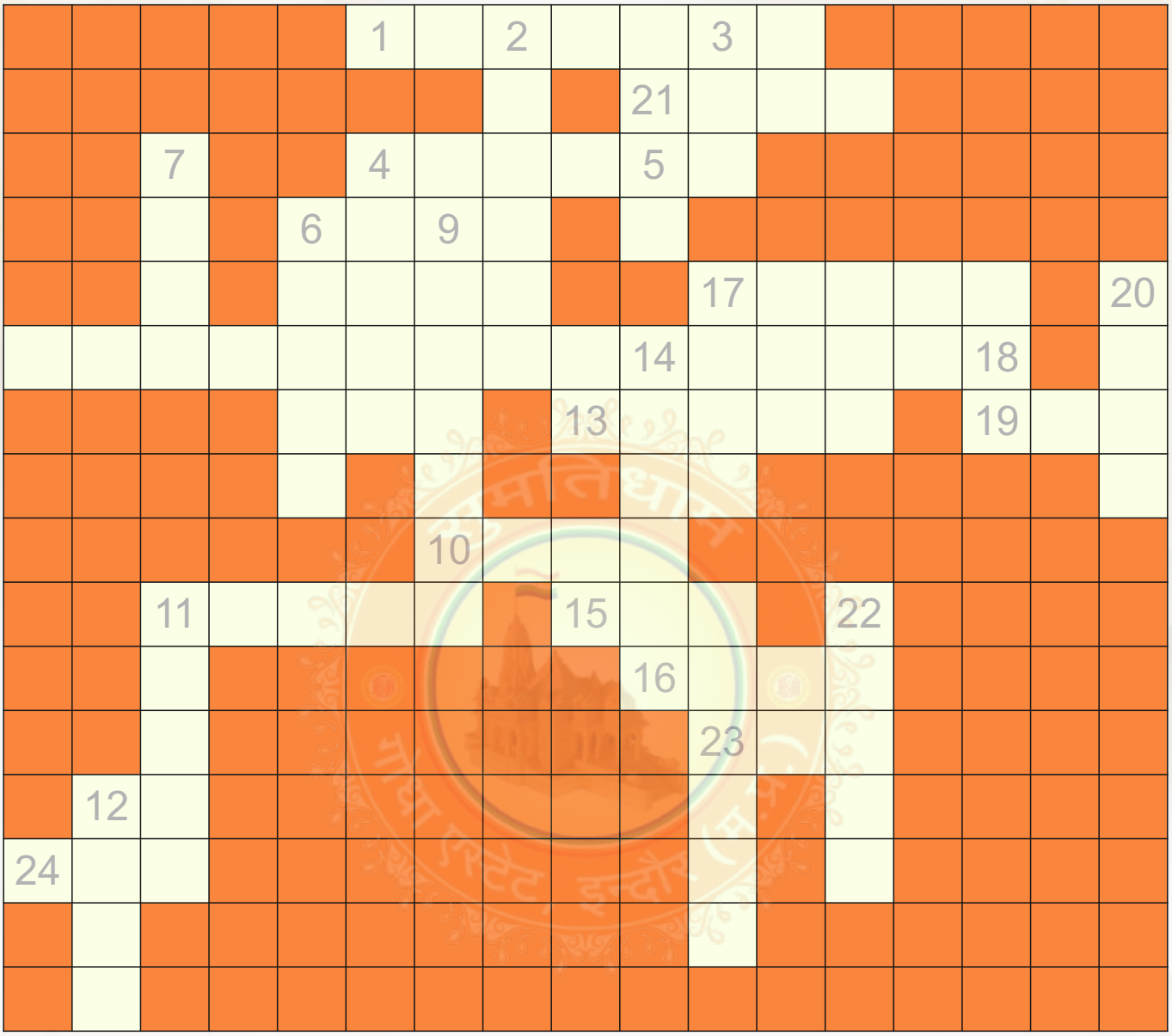

बाईं से दाईं ओर-

1. कल्पोपपन्न देव का अन्य नाम ?(7)
4. भवनवासी देव में से एक भेद ? प्रथम ढाल में जिसका वर्णन है ?(6)
8. पं. बुधजनजी के बाद जिन्होंने छहढाला लिखी ?(9)
10. ज्ञान के घमंड को क्या कहते हैं ?(4)

ऊपर से नीचे की ओर-

2. छहढाला में वेश्या के लिए कौन-सा शब्द उपयोग किया है ?(5)
3. ..... जीव को एक गिने, बहिरातम तत्त्व मुधा है। रिक्त स्थान की जगह शब्द आयेगा ?(2)
4. 'कुगुरु-कुदेव-कुवृष-सेवक की नहीं, प्रशंस उचरै है।' यह पंक्ति किस दोष से सम्बन्ध रखती है ?(5)

11. पाँच भेदों रूप संसार चक्र में परिभ्रमण करना ?(5)

12. छहढाला में किसकी कहानी है ?(2)

13. सम्यग्दर्शन के साथ होने वाला ज्ञान ?(5)

14. तीन रत्नों में से एक ?(6)

15. पाँचों इन्द्रिय में से एक इन्द्रिय ?(3)

16. सम्यग्दर्शन नहीं होने पर क्या मिलना कठिन है ?(4)

17. मुनिराजों के व्रतों को क्या कहा जाता है ? (5)

19. निर्जरा का एक भेद ?(3)

21. दौलतराम जी की दो प्रसिद्ध रचनाओं में से एक ?(4)

23. ज्ञान आपको रूप भये, फिर ..... रहावै ।(3)

24. आत्मज्ञान न होने से जीव को मुनि बनकर कहाँ उत्पन्न होने पर भी सुख प्राप्त नहीं हुआ ?(3)

5. अहंकार का कौन-सा पर्यायवाची तीसरी ढाल में प्रयोग किया है ?(2)

6. कुगुरू किसके समान हैं ?(5)

7. मिथ्यादर्शन अर्थात् ..... श्रद्धान। रिक्त स्थान में कौन-सा शब्द आयेगा ।(4)

9. तीन लोक में सार रूप क्या है ?(7)

11. सकल-निकल रूप से दो भेदों में विभाजित ?(4)

12. मुनिराज या श्रावक को अवश्य करने योग्य कार्य ?(4)

14. मोक्षमार्ग की प्रथम सीढी ?(4)

17. ..... न लहैं सो दर्शन, धारो भव्य पवित्रा ? (4)

18. संसारी जीवों का एक भेद ?(2)

20. इच्छित पदार्थ देने वाला विशेष रत्न ?(4)

22. वह ज्ञान जो सिद्धालय तक जीव के साथ जाता है ?(5)

23. पाँचवी ढाल में किसकी चर्चा की गई है ? (4)

पर्यायवाची शब्द (24)

नोट:- नीचे दिए गये शब्दों के लिए छहढाला में कौन-सा शब्द दिया गया है खोजकर बताएं -

1.	थोड़ा झूठ -	6.	स्थिर -	11.	प्रत्यक्ष -	16.	जिनेन्द्र देव -
2.	पीप -	7.	स्पर्श -	12.	लोक -	17.	गृहस्थ -
3.	कर्म -	8.	शमशान -	13.	अगृहीत -	18.	सुवर्ण -
4.	दु:ख -	9.	तीन मूढ़ता -	14.	मोक्षमार्ग -	19.	इन्द्रिय -
5.	वैश्या -	10.	कुधर्म -	15.	खून -	20.	हड्डी -

बारह भावना (25)

नोट:- यहाँ आपको 20 प्रकार की बारह भावनाएं दी जा रही हैं (मात्र एक पंक्ति) आपको उसके लेखक/रचयिता का नाम भावना शतक पुस्तक से खोजकर लिखना है-

1. राजा राणा छत्रपति हथिन के असवार
2. आयु घटत तेरी दिन रात, होय निचीत
3. जल पय ज्यों जिय तन मेला
4. द्रव्य रूप करि सर्वथिर
5. सर्वजग है अथिर ध्रौव्य नहिं मानिये
6. जग है अनित्य यामैं सरन न वस्तु कोय
7. माता है वैराग्य की, सब जीवन हितकार
8. बंदू श्री अरहंत पद, वीतराग विज्ञान
9. अंजुली जल सम जवानी क्षीण होती
10. भोग उपभोग जे कहे हैं संसार रूप
11. वस्तु पदारथ नयन तें, जे जे निजरें आय
12. संसार में सुत सुता सजनी सजन अरु सीमंतिनी
13. काम कंचन कामिनी, विषय भोग सब जोग
14. धिक्-धिक् या संसार में, नित्य नहीं पर्याय
15. विश्व में जो वस्तु उपजी, नाश तिनका हो गया
16. भव वन में जी भर घूम चुका
17. जीव आत्मा अमर है, इसका मरण न होय
18. हो कोई राजा या राणा बादशाही नाम वर
19. विधि समूह को नाशकर, पायो अविचल थान
20. संयम को लखि काल प्रभु वैराग्य चितारो

छहढाला ग्रन्थ के सन्दर्भ में कतिपय मनीषियों के उद्गार -

गागर में सागर भर दिया है।

- क्षुल्लक गणेशप्रसाद वर्णी

छहढाला ने कवि को अमर बना दिया है।
कवि दौलतरामजी के कारण माँ भारती का मस्तक उन्नत हुआ है।

- हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन

आध्यात्मिक जैन साहित्य का यह जगमगाता रत्न है।

- पण्डित नेमीचन्द पटोरिया

यह वह कृति है, जिसे पढ़कर पाठक निजानन्द-रस में मग्न हो जाता है।

- पण्डित परमानन्द जैन

अनेक आगमों का मन्थन कर 'छहढाला' का निर्माण हुआ है।

- पण्डित दरबारीलाल कोठिया

भाव, भाषा और अनुभूति की दृष्टि से यह रचना बेजोड़ है।

- श्री नेमीचन्द शास्त्री, आरा

दौलतरामजी प्रबुद्ध, आध्यात्मिक, प्रकृति के अन्तः स्तल के अन्तर्दृष्टा कवि हैं।

- पण्डित सुमेरचन्द्र दिवाकर

अनुप्रेक्षा धाम (26)

नोट - आपको सभी उत्तर बारह भावनाओं से सम्बंधित दिए जा रहे हैं। आपको बताना है कि ये प्रश्न किस भावना से सम्बंधित हैं। आपको उत्तर शीट में मात्र क, ख, ग, घ ही लिखना है।

1. कोई मेरा साथ दे या न दे पर मेरे शरीर में इतनी ताकत है कि सब कुछ मैं खुद ही कर लूँगा, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना :

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) अशुचि भावना (घ) आस्रव भावना

2. मेरे पति की करनी का फल मुझे भोगना पड़ रहा है, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना-

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) एकत्व भावना (घ) अशुचि भावना

3. मैं मेरे पिता का पुण्य भोग रहा हूँ,जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना-

(क) अशरण भावना (ख) आस्रव भावना (ग) एकत्व भावना (घ) निर्जरा भावना

4. अभी जो धनादि मिले हैं उसे भोग कर तो मैं सुखी हो जाऊं, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना-

(क) अनित्य भावना (ख) अशुचि भावना (ग) संसार भावना (घ) बोधिदुर्लभ भावना

5. जो धन को बनाये रखना चाहता है उसने नहीं माना है-

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) धर्म भावना (घ) लोक भावना

6. मेरे बच्चे मेरे सुख-दुख में काम आयेंगे जो ऐसा सोचता है उसने नहीं माना है-

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) धर्म भावना (घ) लोक भावना

7. Latest Mobile होने से मुझे सुख है, जो ऐसा मानता है उसने नहीं मानी है

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) संसार भावना (घ) एकत्व भावना

8. मेरा बेटा बड़ा होकर Engineer बनेगा, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना-

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) धर्म भावना (घ)लोक भावना

9. मुझे पति के साथ रहने से सुख मिलता है, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना है-

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) धर्म भावना (घ)लोक भावना

10. बाद की 6 भावनायें हैं:

(क) वैराग्यपरक (ख) तत्त्वपरक (ग) संसारवर्धक (घ) मनोरंजक

11. प्रारंभ की 6 भावनायें हैं

(क) वैराग्यपरक (ख) तत्त्वपरक ग) संसारवर्धक घ) मनोरंजक

12. राग करने से सुख होता है, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना-

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना ग) अशुचि भावना घ) आस्रव भावना

13. यह लोक नष्ट हो जाता है, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना-

(क) अनित्य भावना (ख) बोधिदुर्लभ भावना (ग) लोक भावना (घ) आस्त्रव भावना

14. मुनिदीक्षा में दुख है, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना:

(क) आस्रव भावना (ख) निर्जरा भावना (ग) अशुचि भावना (घ) लोक भावना

15. रत्नत्रय प्राप्ति में क्या है, बुढ़ापे में कर लेंगे, जो ऐसा मानता है, उसने नहीं माना है-

(ग) अशुचि भावना (ख) बोधिदुर्लभ भावना (ग) लोक भावना (घ) आस्त्रव भावना

16. मनुष्य भव तो यों ही मिल जाता है, इतने करोड़ों मनुष्य हैं, जो ऐसा मानता है उसने नहीं माना:

(ग) अशुचि भावना (ख) बोधिदुर्लभ भावना (ग) लोक भावना (घ) धर्म भावना

17. डॉक्टर जैन मुझे हर बीमारी से बचा सकते हैं, ऐसा मानने वाले ने नहीं माना है-

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) एकत्व भावना (घ) अशुचि भावना

18. बारह भावना कौन-सा तत्त्व हैं -

(क) आस्रव तत्त्व (ख) बंध तत्त्व (ग) संवर तत्त्व (घ) मोक्ष तत्त्व

19. आत्मानुभूति और भेद विज्ञान की मुख्यता से चिंतवन किया जाता है-

(क) अशुचि भावना (ख) बोधिदुर्लभ भावना (ग) लोक भावना (घ) संवर भावना

20 . संयोग सारहीन हैं, ऐसा चिंतवन किया जाता है:

(क) अनित्य भावना (ख) अशरण भावना (ग) एकत्व भावना (घ) अशुचि भावना

श्रावकव्रत धाम (27)

1. जो व्रत मुनिधर्म को पालन करने की शिक्षा देते हैं, वे व्रत क्या कहलाते हैं –

(क) श्रावकव्रत (ख) महाव्रत (ग) क्षुल्लकव्रत (घ) शिक्षाव्रत

2. शाश्वत पर्व हैं –

(क) माह की दो अष्टमी (ख) माह की दो चतुर्दशी (ग) क,ख दोनों (घ) अक्षय तृतीया

3. अपनी ब्याही पत्नी को छोड़कर बाकी शेष स्त्रियों में राग का त्याग है –

(क) ब्रह्मचर्य अणुव्रत (ख) ब्रह्मचर्य महाव्रत (ग) सदाचार (घ) कुशील

4. बाह्य वस्तुओं का आजीवन प्रमाण कर लेने को कहते हैं –

(क) परिग्रह त्याग (ख) भोग-उपभोग परिमाण (ग) परिग्रह परिमाण (घ) अहिंसाव्रत

5. चौथी ढाल में किसका वर्णन है –

(क) सम्यक् ज्ञान (ख) देश चारित्र (ग) क, ख दोनों का (घ) दोनों का नहीं

6. 'मैं जीवन पर्यंत भारत के बाहर नहीं जाऊंगा।' – इस प्रकार संकल्प करना है –

(क) परिग्रह परिमाण (ख) देशव्रत (ग) सामायिक (घ) दिग्व्रत

7. अहिंसा अणुव्रत है –

(क) संकल्पी त्रस हिंसा का त्याग (ख) आरंभी हिंसा का त्याग

(ग) उद्योगी हिंसा का त्याग (घ) विरोधी हिंसा का त्याग

8. बार-बार जिसको भोगा जा सकता है उसे कहते हैं –

(क) परिग्रह (ख) भोग (ग) उपभोग (घ) प्रमादचर्या

9. चलते फिरते घास- पत्ती तोड़ लेना है –

(क) अहिंसा व्रत (ख) प्रमादचर्या (ग) हिंसोपदेश (घ) परिग्रह पाप

10. क्या करके आहार करना चाहिए –

(क) पूजा पाठ करके (ख) भूखे-प्यासे को रोटी आदि दान करके

(ग) पात्रों को आहार दान करके (घ) धन कमाकर

11. सम्यक् ज्ञान सम्यक् दर्शन का –

(क) कारण है (ख) कार्य है (ग) भेद है (घ) पूर्वोक्त तीनों हैं

12. मन: पर्यय ज्ञानी जानते हैं –

(क) सभी को (ख) दूसरे के मन की बातों को

(ग) अरूपी द्रव्यों को (घ) दिमाग की बातों को

13. गृहस्थी के षट कर्म से कमाए पाप कर्म रूपी मल को दूर करता है –

(क) साबुन (ख) आहारदान (ग) पैसा दान (घ) करुणा दान

14. शिक्षाव्रत नहीं है –

(क) प्रोषधोपवास (ख) अतिथि संविभाग (ग) देशव्रत (घ) सामायिक

15. विपर्यय दोष से रहित होता है –

(क) सम्यक् दर्शन (ख) सम्यक् ज्ञान (ग) सम्यक् चारित्र (घ) शंका

16. पिस्तौल, हथियार आदि अन्य को प्रयोग करने के लिए देना है –

(क) मदद (ख) हिंसा पाप (ग) प्रमादचर्या अनर्थदण्ड (घ) हिंसोपकरण अनर्थदण्ड

17. सम्यक् प्रकार से शरीर और कषायों के कृष करने को कहते हैं –

(क) सामायिक (ख) ध्यान (ग) तप (घ) सल्लेखना

18. पाँच स्थावर काय जीवों की व्यर्थ में हिंसा न करना है –

(क) सत्य अणुव्रत (ख) महाव्रत

(ग) प्रमादचर्या अनर्थदण्ड त्याग (घ) अहिंसा महाव्रत

19. घर में पंखे-लाइट चालू करके ही छोड़ जाना है –

(क) अहिंसा अणुव्रत का अभाव (ख) परिग्रह का दुरुपयोग

(ग) प्रमाद चर्या अनर्थदंड (घ) भोग-परिभोग व्रत में दोष

20. पुण्य-पाप के उदय में हर्ष-विषाद नहीं होना चाहिए क्योंकि –

(क) दोनों पुद्गल कर्म की अवस्था हैं। (ख) दोनों अज्ञानमय हैं।

(ग) दोनों निर्जरा के कारण हैं। (घ) दोनों संसार नाशक हैं।

वर्ष 2024 में सम्पन्न हुए श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव की झलकियाँ

देवाधिदेव श्री सुमतिनाथ जिनालय (सुमतिधाम)

कल्याणलोक के पास, मुक्की गेट, एच.पी. पेट्रोल पंप के पीछे

गोधा स्टेट, इन्दौर म.प्र. 453112

ऑनलाइन जैन बाल पाठशाला

WWW.SANJAYSIDDHARTHI.COM

ऑनलाइन जैन बाल पाठशाला
ॐ
।ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
इंदौर

OUR PUBLICATION'S

Games :-

01. महामंत्र पज़ल गेम
02. चत्तारी मंगल पज़ल गेम
03. जैन कार्ड गेम
04. मेमोरी गेम 01 (7 गेम)
05. मेमोरी गेम 02
06. थ्री इन वन गेम
07. खेल 108 का
08. अध्यात्मिक क्रिकेट
09. जैन गिनती
10. जैन लूडो (12 से अधिक गेम)

Books :-

01. मम्मी की पाठशाला भाग - 1 एवं 2
02. पापा की प्रयोगशाला गतिविधि 1 एवं 2
03. जैन अल्फावेट फ्लैश कार्ड(अंग्रेजी-हिन्दी)
04. तीर्थंकर फ्लैश कार्ड (हिन्दी)
05. बाल कवितायें
06. जैन ड्राईग बुक
07. जैन कार्य पुस्तिका (हिन्दी)
08. जैन कार्य पुस्तिका (अंग्रेजी)
09. जैनत्व संस्कार पुस्तक
10. स्मार्ट लर्निंग बुक भाग - 1 एवं 2

103 - सी, सोमानी नगर, एयरपोर्ट रोड इंदौर (म.प्र.)
संजय सिद्धार्थी (मो. 7509824330) श्रीमती प्रिया (मो. 7649809862)